1- पहली अवस्था - प्रतिवर्त क्रियाओं की अवस्था -
यह 30 दिन तक की अवस्था होती है।
इस अवस्था में बालक मात्र प्रतिवर्त क्रियायें करता है। इस प्रतिवर्त क्रियाओं मे चूसने का प्रतिवर्त सबसे प्रबल होता है।

2. यह अवस्था एक से 4 माह की अवधि तक होती है। इस अवस्था में शिशुओं की प्रतिवर्त क्रियायें उनकी अनुभूतियों द्वारा कुछ हद तक परिवर्तित होती है। और दोहराई जाती है एक दूसरे के साथ समन्वित हो जाती है।

3. यह अवस्था 4 से 8 माह की अवधि तक होता है। इस अवस्था शिशु अवस्थाओं के उलटने - पलटने तथा छूने पर अपना अधिक ध्यान देता है। ये शरीर के प्रतिवर्तन क्रियाओं को जान बूझ को ऐसा कार्य दोहराता है। जो उसे सुनने या करने में रोचक बनाती है।

4. यह अवस्था 8 से 12 माह तक होती है।
इस अवस्था मे बालक उद्देश्य तक का लक्ष्य प्रारम्भ कर देता है।
जैसे कोई खिलौना छिपा दिया जाता है तो वह उस वस्तु को इधर - उधर से खोजना प्रारम्भ कर देता है।

5- यह अवस्था 12 से 18 माह की अवधि तक होती है। इस अवस्था में बालक के गुणों का प्रयास तथा गलतियों को सुधारने का प्रयास करता है।

6. यह अवस्था अन्तिम अवस्था है। जो 18 से 24 तक की अवधि में होती है। यह वह अवस्था है। बालक वस्तुओं के बारे मे चिन्तन करना प्रारम्भ कर देता है।

2. प्राक् संक्रियात्मक अवस्था :- संज्ञानात्मक विकास की अवस्था इसे 7 वर्ष की होती है यह प्रारम्भिक बाल्यावस्था होती है। इस अवस्था में पियाजे ने दो अवस्थाओं में विभक्त किया है।

1- संकेत

2. चिन्ह

जैसे बालक अपनी माँ की आवाज सुनता है, तब उसके मन में उसकी माँ की प्रतिमा बनती है संकेत का उदाहरण है।

3. ठोस (स्थूल) संक्रियात्मक अवस्था - अवस्था 7 से चलकर 12 वर्ष तक चलती है। इनकी विशेषता यह कि बालक वस्तु को ठोस रूप में पहचानना शुरू कर देता है,

4. औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था - यह अवस्था 11 वर्ष से प्रारम्भ होकर वयस्कावस्था तक चलती है। इस अवस्था में किशोर चिन्तन करता है। तथा प्रभावी होता है। वे चिन्तन में पूर्ण क्रमबद्धता लाते हैं। समस्या का समाधान सोचकर-समझकर कर लेते है।

SR Sharma

Unit - 2

अधिगम के प्रकार (Types of Learning)

1. तथ्यात्मक अधिगम
2. साहचर्य आथ अधिगम
3. सम्प्रत्ययात्मक अधिगम
4. प्रक्रियात्मक अधिगम
5. सामान्यीकरण अधिगम
6. सिद्धान्त और नियम अधिगम
7. अभिवृत्ति एवं मूल्य अधिगम
8. अधिगम कौशल

1. तथ्यात्मक अधिगम – वास्तविकता, सत्य व सत्यापित तथ्यात्मक अधिगम पहले से प्रमाणित ज्ञान व तथ्यों को सीखना है जो बालों के अधिगम को निरन्तरता को बनाये रखने के लिए आवश्यक होता है।
जैसे - गणित व विज्ञान का सिद्धान्त तथा बालक द्वारा सिखाये जाने वाले पहाड़े आदि।

2. साहचर्य अधिगम:- इस प्रकार के सीखने में सहचर्य को महत्वपूर्ण स्थान होता हैं जब दो या दो से अधिक वस्तुओं व्यक्तियों या तथ्यों अथवा आंशिक रूप से समानता होती है। या असमानता होती है।
इस प्रकार का अधिगम मन्द-बुद्धि बालक व छोटे बालकों में कराया जाता है
जैसे· अनुशासन पुरस्कार, बारबार पुरस्कार दिये जाने से शिक्षक द्वारा प्रशंसा किये जाने पर बालक अनुशासक रहना सीख जाता है

3. सम्प्रत्यात्मक अधिगम:- इस प्रकार के सीखने में व्यक्ति तर्क, कल्पना चिन्तन का सहारा लेना पड़ता है, सम्प्रत्यय

सम्प्रत्यय निर्माण प्रत्यक्षीकरण के बाद होता है। विभिन्न वस्तुओं को प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त कर व्यक्ति उसके गुणों का विश्लेषण करता। जैसे- भिन्न रंग की गायों सामान्यता का आधार पर सब प्रकार की "गाय" की लेखा होती है।

4- प्रक्रियात्मक अधिगम:- संक्रियात्मक अधिगम का तात्पर्य उन गत्यात्मक कौशल के विकास से हैं जिनका सम्बन्ध आदत एवं ज्ञान तथा कौशलों से होता है।
जैसे तैरना, टाइपिंग व गणितीय योग्यता

5- सामान्यीकरण अधिगम:- अधिगम क्षेत्र में समान्यीकरण अर्थ सीखे गये ज्ञान को समान परिस्थितियों से हैं। तथा प्रमाण प्रमाणिक, नियमों के व सिद्धान्तों का वास्तविक परिस्थितियों के प्रयोग से है।
सामान्यीकरण को निम्न स्तरो मे विभक्त किया गया है।

समान्यीकरण
↓
मूल्यांकन
↓
संश्लेषण
↓
विश्लेषण
↓
प्रयोग
↓
बोध
↓
ज्ञान

6. सिद्धान्त और नियम अधिगम :- नियमों का अधिगम प्राय: आगमन-व निगमन विधियों द्वारा किया जाता है। निगमन तथा नियमों को प्रमाणित करने के के लिए कई उदाहरणों का प्रयोग किया जाता है।

ज्ञान — बोध — प्रयोग — विश्लेषण — संश्लेषण

अभिवृत्ति एवं मूल्य अधिगम :- ~~सम्पूर्ण~~ अभिवृत्ति एवं मूल्य अधिगम का सम्पूर्ण अध्ययन आगे के प्रश्नों का हल करके से है।

अधिगम कौशल :- अधिगम या सीखना एक कौशल है। कुछ लोग ~~ज~~ जल्दी सीखते हैं और कुछ लोग देर से सीखने का विषय अधिगमित कर लेता है। यही सीखना है। और यह कुशलता है। सीखने कौशल के नवीन ज्ञान नवीन क्रिया, आदत, अनुभवों का उपयोग ज्ञान तथा स्थानान्तरण स्मृति तथा अनुकूलन के सभी कौशल है। इनको सीखना पड़ता है।

जिज्ञासा का अर्थ व परिभाषा →

जिज्ञासा किसी वस्तु को जानने अथवा सीखने की तीव्र अभिलाषा है। छात्र स्वभाव से ही जिज्ञासु होता है। जिसकी जिज्ञासा ही उसे नवीन ज्ञान हेतु तत्पर बनाती है।

जिज्ञासा का कर्तव्य है कि वह छात्र जिसकी जिज्ञासा को अन्यथा न लेकर उसकी जिज्ञासा की शान्ति हेतु सही ज्ञान प्रदान करे। शिक्षक द्वारा छात्रों को प्रश्न पूछने हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए तथा स्वयं शिक्षक के ज्ञान का विकास भी छात्रों के द्वारा जिज्ञासा शान्ति पूछे गये प्रश्नों से होती है।

जिज्ञासा द्वारा अधिगम प्रक्रिया

1- बालक जैसे बड़ा होता है वातावरण के सम्पर्क में आता है उसमें उत्तरोत्तर ज्ञान हेतु जिज्ञासा बढ़ती जाती है जो स्वाभाविक है।

2. जिज्ञासा का परिणाम स्वरूप उसमें कौतूहल उत्पन्न होता है, जो एक प्रकार की ऊर्जा है। जिसके कारण बालक की जब तक जिज्ञासा शान्त नहीं हो जाती है तब तक वह असन्तुलित होता है।

3 बालक द्वारा प्राप्त ज्ञान व अनुभव की नवीन परिस्थिति में पुनः अनुभव किया जाता है तथा प्रमाणित होने पर उसे नवीन प्रत्यय व अनुभव के रूप में अपनी स्मृति में संचित किया जाता है।